Indian J. Soc.& Pol. 04(02):2017:147-148 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

भीटा की वर्तमान पुराकला सम्पदा

विकास सिंह[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर–प्राचीन इतिहास, राजकीय महिला स्नातकोत्तर,महाविद्यालय, गाजीपुर, उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद मुख्यालय से लगभग 22 किमी0 दक्षिण पश्चिम में यमुना नदी के दाहिने किनारे पर (25° 19′ उत्तरी अक्षांश, 81° 48′ पूर्वी देशान्तर) पर देवरिया नामक ग्राम के पश्चिमी छोर पर भीटा का पुरास्थल अवस्थित है। देवरिया के पश्चिम में भीटा ग्राम है। यहाँ भी पुरास्थल का किंचित विस्तार हैं सर्वप्रथम 1872 ई0 में जनरल कनिंघम तथा बाद में 1910–1912 ई0 के बीच सर जान मार्शल ने यहाँ उत्खनन कार्य करवाया। इन कार्यों सें इस स्थान की समृद्ध ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उजागर हुयी। प्रस्तुत शोध पत्र में भीटा की पुराकला सम्पदा का ऐतिहासिक सन्दर्भ में महत्व रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

KEY WORDS: प्राचीन इतिहास, पुराकला, भीटा, पंचमुख शिवलिंग

कनिंघम ने इस स्थान की पहचान जैन ग्रन्थ 'वीरचरित' में उल्लिखित 'वीथाव्यटन' नगर से की। इसके अनुसार महावीर के समय वह नगर समृद्धिशाली बाजार था। मार्शल को यहाँ से 'सहजातिनिगमस' तथा 'विच्छिग्राम' अंकित मृण्मुहरें प्राप्त हुई थी।[02] 9 वाँ वर्षावास कौशाम्बी में बिताने के बाद अंगुत्तर निकाय के अनुसार बुद्ध सहजाति नगर गए थे। यह नगर गंगा–यमुना के संगम के समीप था। अतः कुछ विद्वान भीटा की पहचान सहजाति नगर से करते हैं। हालाँकि रामशरण शर्मा ने 'सहजातिनिगमस' मृण्मुहर को ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी के किसी व्यापारिक संगठन की मुहर माना है। उन्होंने सहजाति को स्थान सूचक शब्द मानने से इंकार कर दिया।(शर्मा,2010पृ051) मार्शल ने 'विच्छिग्राम' की पहचान भीटा से की है। हालाँकि के. के. थपलियाल सदृश विद्वान इस पहचान पर भी सन्देह करते हैं। भीटा प्राक्मौर्यकाल में ही नगर के स्वरूप में आ गया था परन्तु विकसित भौतिक संस्कृति के अवशेष मौर्य, कुषाण एवं गुप्त काल से ही सम्बन्धित हैं। इसके बाद इसका नगरीय स्वरूप समाप्त हो गया और ग्राम के स्परूप में आ जाता है।

भीटा से प्राप्त मूर्तियों, मुहरों, सिक्कों आदि से यहाँ की समृद्ध कला का निदर्शन होता है। यहीं से ही भारतवर्ष के दो प्राचीनतम शिवलिंगों में से एक शिवलिंग (पंचमुख, तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है।(जोशी,1972पृ099.100) प्राप्त कलात्मक अभिधान देश के विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित एवं संरक्षित हैं फिर भी कुछ कलावशेष अभी भी भीटा में अपने अतीत को अक्षुण्ण रखे हुए हैं। भीटा में मुख्यतया तीन पहाड़ी टीले हैं। इन टीलों में पहाड़ को काटकर इस्वी सन् की आरम्भिक शताब्दियों में गुफाएं बनाई गयी थीं। सबसे दक्षिण की पहाड़ी के पश्चिमी भाग में दो गुफाएँ हैं। इनमें से दाहिनी गुफा कुछ बड़ी है। संभवतः यह कुछ प्राकृतिक थी जिसे काटकर और बड़ा कर दिया गया था। गुफा के आमुख द्वारों पर शिवमुख एवं शिवलिंग उत्कीर्ण किए गये हैं। द्वार के दाहिनी तरफ एक त्रिमुखीशिवमुख, चार शिवमुख, फिर सात शिवमुख तथा दो शिवलिंग उत्कीर्ण है। वही बायीं तरफ दो शिवमुख, एक पूरी शिवमूर्ति तथा 2 शिवलिंग उत्कीर्ण हैं। थोड़ा और बाएं पहाड़ी पर त्रिमुखी शिव, 1 शिवमुख तथा 1 शिवलिंग अंकित हैं।

गुफा के आमुख द्वारों पर उत्खचित शिवमुख

इस गुफा के दाहिनी तरफ एक छोटी गुफा है। यह उपासना स्थल सा प्रतीत होता है। इसके भीतरी दीवार में कोष्ठक का निर्माण किया गया है जहाँ संभवतः उपास्य देव स्थापित किए जाते रहे होंगे। बायीं दीवार में दीपक रखने के

1:Corresponding Author

लिए ताखा बना हुआ है। इस गुफा के ऊपर पहाड़ पर इस प्रकार नालियाँ काटी गई हैं कि जिससे बारिश का पानी गुफा के सामने न गिरे। इस गुफा के ऊपर शिखर बनाने का भी प्रयास द्रष्टव्य है। इस गुफा के द्वार पर एक अभिलेख भी अंकित है जो कि लगभग नष्ट हो गया है। भीटा की बीच की पहाड़ी के पश्चिम दक्षिण कोने पर ऊँचाई पर एक गुफा का निर्माण किया गया था। यह गुफा दक्षिण तथा पूर्व–उत्तर दो दिशाओं में खुली हुई है। इसके पूर्वोत्तर द्वार पर भी शिवमुखों एवं शिवलिंगों का अंकन हुआ था। जो जब पूरी तरह नष्ट हो चुका है। इसका उपयोग आवास स्थल के रूप में होता रहा होगा।

पुरास्थल के उत्तर में यमुना नदी बहती है। नदी के बीच में एक छोटी पहाड़ी के शिखर पर सुजावन देवता का मंदिर है। प्राचीन काल में यह पहाड़ी भीटा की बस्ती के उत्तर में यमुना के किनारे रही होगी परन्तु लगातार यमुना नदी की कटान से यह स्थान बस्ती से अलग होकर यमुना के बीच में आ गया है। मुगल काल में शाहजहाँ के समय इलाहाबाद के सूबेदार शायस्ता खाँ ने पुराने मन्दिर का विध्वंस कराकर उस स्थान पर एक अठपहल बैठक बनवा दी। (पाण्डेय,2065,वि0सं0 200) बाद के काल में किसी समय यहाँ पुनः शिवलिंग स्थापित कर इसे मन्दिर का रूप दे दिया गया। मन्दिर में स्थापित शिवलिंग की लम्बाई लगभग 27 से0मी0 है। वास्तव में यह मानित शिवलिंग बौद्धों का एक संकल्पित स्तूप है, जिसके नीचे चारो ओर मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इनमें से तीन मूर्तियाँ सम्प्रति द्रष्टव्य है तथा चौथी मूर्ति टूट गई है। इसका अनुमानित समय लगभग सातवीं शताब्दी ईसवी है। भीटा में हम बौद्ध प्रतीकों के शैवीकरण की प्रक्रिया को संपादित होता हुआ पाते हैं।

पहाड़ी के उत्तरी तरफ मन्दिर की सीढ़ियों से ऊपर एक युगल मूर्ति उत्कीर्ण है तथा साथ में एक अभिलेख अंकित है। इसी तरह पूर्वी ओर भी तीन बड़ी एवं दो छोटी मूर्तियाँ एक साथ उत्कीर्ण है जिसे पंच पाण्डव कहा जाता है। इन मूर्तियों की पहाड़ पर अवस्थिति तथा चूना–गेरू से पुता होने के कारण अध्ययन दुष्कर कार्य है।

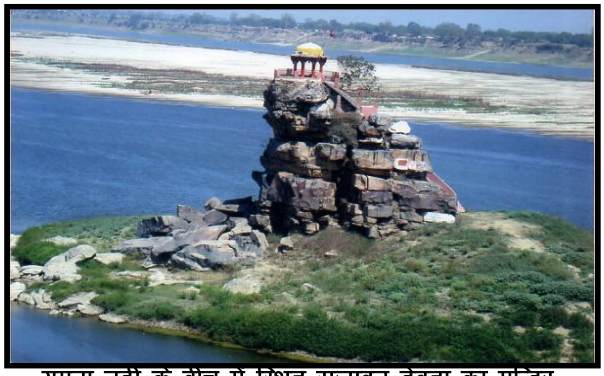

यमुना नदी के बीच मे स्थित सुजावन देवता का मन्दिर

मन्दिर में स्थापित शिवलिंग(बौद्धों का संकल्पित स्तूप)

यमुना नदी के किनारे सुजावन देवता के मन्दिर तक जाने वाले रास्ते पर एक नाग प्रतिमा आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया द्वारा निर्मित चबूतरे पर स्थानक मुद्रा में संरक्षित की गई है। खुले में होने के कारण निरन्तर उसमे क्षरण हो रहा है। परिणामतः इसके विशिष्ट लक्षण नष्टप्राय हैं। इसमें शीर्षभाग को सातफणों से आवृत्त प्रदर्शित किया गया है। शीर्ष से पाद तक सम्पूर्ण आकृति मानव की है पृष्ठ भाग में नाम का रूप निर्मित किया गया है। इसके फण भाग पर एक लघु लेख था जो पूर्णतया घिस कर नष्ट हो गया है। केवल म तथा ध अक्षर ही पढ़े जा सकते हैं। अक्षरों के आधार पर उसका भी समय आठवीं नवीं शताब्दी ईसवी स्वीकार किया जा सकता है।(शुक्ल, 1997 पृ047.48) इस प्रकार प्रयाग की नाग परम्परा का विस्तार हम भीटा में भी पाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भीटा में अवशिष्ट पुरावशेष कलात्मक दृष्टि से उन्नत भीटा का अतीत प्रस्तुत करते है। गुफाएँ भले ही अत्यन्त साधारण हैं लेकिन नाग की प्रतिमा एवं शिवमुखों को उत्कीर्ण करने में कलाकारों ने उतनी ही विशिष्टता दर्शायी है। इस रूप में भीटा महान कौशाम्बी नगरी के साथ का नगर था। इसका अस्तित्व कौशाम्बी के अस्तित्व के साथ–साथ समाप्त हो गया।

सन्दर्भ

मार्शल, सर जान (1915)– एक्सकेवेशंस ऐट भीटा, *आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया ए एनुअल रिपोर्ट, 1911–12,* कलकत्ता

शर्मा, रामशरण (2010) *भारत के प्राचीन नगरों का पतन,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,

पाण्डेय धर्मराज(2065वि सं0) *प्रयाग भ्रमण,* इलाहाबाद

शुक्ल, वी0 सी0(1997) *भारतीय कला के विविध आयाम,* इलाहाबाद,